ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 14
वैशाख शुक्लषष्ठी
विक्रम संवत् 2075
कलि संवत् 5119
21 अप्रेल 2018 से 05 मई 2018
दयानन्दाब्द : 194
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,119
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

तनाव रहित जीवन के लिए योग को अपनाएं

विद्यार्थी अपनी शक्ति व सामर्थ को पहचाने अपनी ऊर्जा अपनी शिक्षा में लगाएं, तनाव रहित जीवन के लिए योग को अपनाएं, अपने समय का सदुपयोग करें अपने माता–पिता के भरोसे का सम्मान करें। उक्त विचार स्वामी रामदेव महाराज ने अंतर्राष्ट्रीय योग शिविर के आयोजक रेजोनेंस के प्रतिनिधि व पतंजलि योग समिति कोटा के प्रतिनिधियों के मध्य व्यक्त किए। पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के केन्द्रीय प्रभारी डॉ. जयद्वीप आचार्य ने कहा की विश्व योग दिवस के सफल आयोजन के लिए रेजोनेंस की टीम व पतंजलि योग समिति की टीम जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों, योग संगठनों, धार्मिक व सामाजिक संगठनों से संपर्क करेगी। पइस बैठक में रेजोनेंस के सीईओ आशीष शर्मा, सोमवीर तयाल व भारत स्वाभिमान के रा%य प्रभारी अरविंद पांडे, जिला अध्यक्ष प्रदीप शर्मा व वेद मित्र शामिल रहे।

यह अंक आर्य समाज छोटी सादड़ी प्रतापगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित किया जा रहा है।
सम्पादक मण्डल आर्य समाज छोटी सादड़ी प्रतापगढ़ अजमेर के समस्त पदाधिकारियों का एतदर्थ धन्यवाद ज्ञापित करता है।

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

अपने 'सहयोग' को बनाएं किसी की मुस्कान

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश–विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की। 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठयक्रम में हैं पाठयक्रम पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

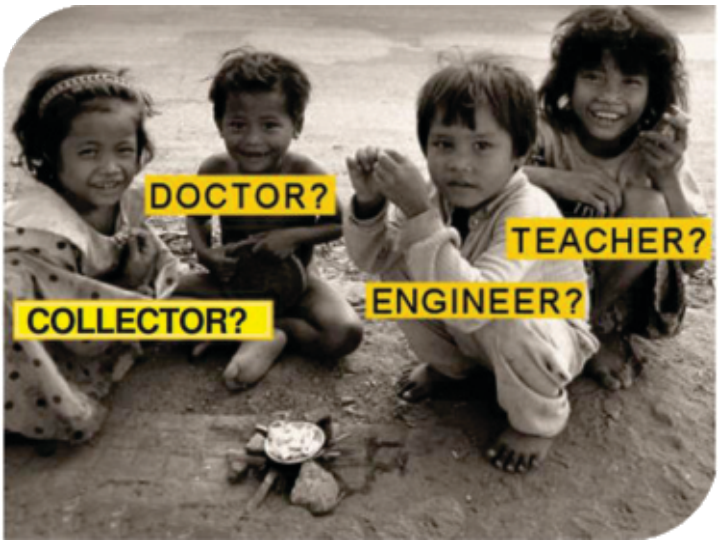

विकासवाद का वैदिक सिद्धान्त

गतांक से आगे...

इस कारण वनस्पतियों की उत्पत्ति के पश्चात् जीव जन्तुओं की उत्पत्ति एककोशीय जीव से ही प्रारम्भ होती है। वनस्पतियों में भी सरल से जटिल संरचना वाली वनस्पतियों की क्रमिक उत्पत्ति होती है। क्रमिक उत्पत्ति का अर्थ यह नहीं कि शैवाल विकसित होकर वट वृक्ष बन जाये अथवा पीपल, आम और बबूल बादाम का रूप ले ले। इसी प्रकार एककोशीय जीव अमीबा की उत्पत्ति भूमि वा जल में होती है, लेकिन कोई जीव भले ही वह एककोशीय हो अथवा बहुकोशीय, केवल कुछ पदार्थों का रासायनिक संयोग मात्र ही नहीं होता, अपितु उसके अन्दर सूक्ष्म चेतन तत्व जीवात्मा का भी संयोग होता है। सम्पूर्ण संयोग ही जीव का रूप होता है। वर्तमान विज्ञान भी रासायनिक संयोगों से कोशिका की उत्पत्ति मानता है–

A very important step the formation of a cell must have been the development of lipid mambrane. In order that biological systems can function efficiently, it is essential that the enzymes connected with successive stages of synthesis of biochemical pathway should be in a close a proximity to one another. The necessary conditions for this are obtained in cells by means of lipid manbranes which can maintain local high concentration of reactants. The presence of hydrocarbons early in the earth's history has already been mentioned....

Life requires for its maintanance a continous supply of energy this could have been provided by ultraviolate or visible light from the sun, or possibly partly from the break down of unstable free radiations produced in the earth's atmosphere by ultraviolate light. [Cell Biology, page - 474 by E.J. Ambrose & Dorothy M.Easty, London -1973]

भाव यह है कि इस पृथिवी पर रासायनिक, जैविक क्रियाओं से विभिन्न प्रकार के एंजाइम्स का निर्माण होकर जीवन हेतु आवश्यक पदार्थों का निर्माण हो गया। इसके साथ ही अनेकत्र रासायनिक पदार्थों द्वारा ही कोशिका भित्तियों तथा जीव द्रव्यादि का निर्माण इस भूमि पर हुआ तथा उन कोशिकाओं को सतत पोषण देने का कार्य पृथिवी पर उपस्थित आवश्यक रासायनिक पदार्थों तथा सूर्य के प्रकाश ने किया। कुछ वैज्ञानिक ऐसा मानते हैं कि पृथिवी पर जीवन किसी अन्य ग्रह से आया, उनसे हम जानना चाहते हैं कि जिस प्रकार किसी अन्य ग्रह पर जीवन की उत्पत्ति हो सकती है, उसी प्रकार इस पृथिवी पर क्यों नहीं हो सकती? वस्तुतः ऐसा विचार सर्वथा अपरिपक्व सोच का परिणाम है। वर्तमान कुछ वैज्ञानिक भी इस धारणा से सहमत

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमौ: । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

नहीं हैं। वे कहते हैं–

The view the life did infact originate on the earth itself after it had cooled over a period of many thousands of years is almost universally accepted today. [Cel Biology, page - 474]

जो वैज्ञानिक अमीबा से विकसित होकर अर्थात् एक प्रजाति से दूसरी प्रजाति के उत्पन्न होने की बात करते हैं, वे यह नहीं विचारते कि न तो वनस्पति में और न प्राणियों में ऐसा परिवर्तन सम्भव है और न इसकी कोई आवश्यकता है। हम यहाँ वैज्ञानिकों के कल्पित व मिथ्या विकासवाद पर कोई प्रश्न इस कारण नहीं करेंगे, क्योंकि हम इस पर पहले अनेक प्रश्न कर चुके हैं। जो डार्विन के विकासवाद की विस्तार से समीक्षा चाहते हैं, उन्हें आर्य विद्वान् पं. रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित 'वैदिक सम्पति' नामक ग्रन्थ पढ़ना चाहिए। भला जब अमीबा की उत्पत्ति रासायनिक क्रियाओं से हो सकती है, तब विभिन्न प्राणियों के शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति इसी प्रकार क्यों नहीं हो सकती? जब 500 से अधिक गुणसूत्रों वाला अमीबा रासायनिक अभिक्रिया से उत्पन्न हो सकता है, तब बन्दर, चिम्पैंजी, ओरांगउटान जिनमें 48–48 गुणसूत्र होते हैं, 46 गुणसूत्र वाले मनुष्य में स्त्री व पुरुष के 23–23 गुणसूत्र वाले शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति अमीबा की भांति क्यों नहीं हो सकती? मनुष्य के ही बराबर गुणसूत्र वाले Sable Antelope जैसे हिरन जैसे पशु तथा Reaves's Muntjac नामक हिरन जैसे जानवर के शुक्राणु व अण्डाणु, 56 गुणसूत्र वाले हाथी के श्शुक्राणु व अण्डाणु क्यों उत्पन्न हो सकते? चींटी, जिसमें केवल 2 गुणसूत्र ही होते हैं, वह क्यों उत्पन्न हो सकती?

यहाँ वैदिक मत यह है कि जिस जीव के भरण–पोषण हेतु जितने कम पदार्थों की आवश्यकता होती है, वह जीव उतना पहले ही उत्पन्न होता है। सभी प्राणियों से पूर्व वनस्पतियों की उत्पत्ति होती है और मांसाहारी प्राणियों से पूर्व शाकाहारी प्राणियों की तथा शाकाहारियों में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जिसे सबसे विकसित व उन्नत माना जा सकता है एवं वह विभिन्न प्राणियों व वनस्पतियों पर निर्भर रहता है, इसी कारण उसकी उत्पत्ति सबसे बाद में होती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि भ्रूणों का विकास बिना मादा के कैसे होता है? शुक्राणु व अण्डाणु तो मानलें रासायनिक क्रिया के फलस्वरूप भूमि व जल में उत्पन्न हो गया परन्तु शुक्राणु व अण्डाणु का निषेचन व भ्रूण का विकास कहाँ व कैसे हुआ? इस विषय में मनु योत्पत्ति की चर्चा करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ में युवावस्था में भूमि से उत्पत्ति बताई है। उन्होंने तर्क दिया है कि यदि शिशु अवस्था में उत्पत्ति होती तो, उनकी रक्षा व पालन कौन करता तथा यदि वृद्ध उत्पन्न होते, तो वंश परम्परा कैसे चलती? इस कारण मनुष्य की युवावस्था में ही भूमि से उत्पत्ति होती है। यद्यपि इस विषय में उन्होंने कोई प्रमाण नहीं दिया परन्तु हमें ऋग्वेद के प्रमाण इस विषय में मिले, जहाँ लिखा है–

उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम्।
ऊर्णम्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात्।। 10.18.10

इस पर मेरा आधिभौतिक भाष्य–हे जीव! (सुशेवाम्) {सुशेवः सुसुखतमः– निरुक्त 3.3} उत्तम सुख देने में सर्वश्रेष्ठ (एताम्) इस (मातरम्) माता के समान (भूमिम्) प्रारम्भ में जिसके गर्भ में सभी प्राणी उत्पन्न होते व जिस पर सभी प्राणी निवास करते हैं, वह पृथिवी (उरु–व्यचसम्) अति विस्तार वाली होकर सभी भ्रूणों को (उप सर्प) निकटता से प्राप्त होती है, इसके साथ ही उस गर्भ का आन्तरिक आवरण निरन्तर हल्का स्पन्दन करता रहता है (ऊर्णम्रदा) {ऊर्णम्रदा इत्यूर्णमृद्वीत्येवैतदाह– काश. 4.2.1. 10, साध्वी देवेभ्य इत्येवैतदाह यदाहोर्णम्रदसं त्वेति– श. 1.3.3. 11} वह भूमि उन भ्रूणों को ऐसा आच्छादन प्रदान करती है, जो ऊन के समान कोमल, चिकना व आरामदायक हो। वह उस दिव्य भ्रूण को सब ओर से गर्भ के समान सुखद स्पर्शयुक्त घर प्रदान करती है। (युवतिः) उस गर्भरूप पृथिवी में नाना जीवनीय रसों के मिश्रण–अमिश्रण की क्रियाएं निरन्तर चलती रहती हैं (दक्षिणावतः) वह पृथिवी उन भ्रूणों को तब तक पोषण प्रदान करती रहती है, जब तक वे अपना पालन व रक्षण करने में पूर्ण दक्ष अर्थात् सक्षम न हो जायें (एषा) यह भूमि (त्वा) तुम जीव को (निर्ऋतेः–उपस्थात्) {निर्ऋतिर्निरमणात् ऋच्छतेः कृच्छ्रापत्तिरितरा– निरु. 2.8} पूर्ण रूप से निरन्तर सानन्द रमण करती है, ऐसे सुरक्षित व उत्तम स्थानों में (पातु) उन भ्रूणों वा जीवों का पालन करती है। इसके साथ ही जहाँ क्लेश पहुंच सकता है, ऐसे असुरक्षित स्थानों से उस भूमि के गर्भरूप आवरण उस जीव व भ्रूण की रक्षा करते हैं।

अगर हम सम्पूर्ण सृष्टि पर गम्भीरता से विचार करें, तो स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण सृष्टि एवं उसका प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ विकास की सीढ़ियां चढ़ते—2 ही वर्तमान स्वरूप में आज दिखाई दे रहा है। बिना क्रमिक विकास के प्राणी जगत् की बात ही क्या करें, कोई लोक—लोकान्तर वा एक कण, फोटोन आदि भी कभी नहीं बन सकता। वैदिक विज्ञान विकासवाद की विशद व्याख्या करता है परन्तु हमारा विकासवाद डार्विन का विकासवाद कदापि नहीं है। डार्विन का विकासवाद वस्तुतः विकासवाद नहीं है, बल्कि अनियन्त्रित व बुद्धिविहीन यदृच्छयावाद (मनमानापन) है, जिसे भ्रमवश वैज्ञानिक विकासवाद नाम दिया जा रहा है।

वास्तव में विकास का अर्थ है, बीज से अंकुर, अंकुर से पौधा व उससे पुष्प, फल व पुनः बीज का उत्पन्न होना। आज विज्ञान जिन्हें मूल कण मान रहा है, वे क्वार्क तथा फोटोन्स भी वास्तव में मूल पदार्थ नहीं है। वे भी सूक्ष्म रश्मियों को संघनित रूप हैं अर्थात् उन रश्मियों के नाना समुदायों के विकसित रूप हैं। जो String theorist इन कणों को सूक्ष्म Strings से निर्मित मानते हैं, वे "जतपदहे भी मूल तत्व नहीं हैं, बल्कि वे वैदिक रश्मियों के संघनित व विकसित रूप हैं। Strings व कणों वा फोटोन्स के विकास से वर्तमान विज्ञान अनभिज्ञ है। जीवविज्ञानी जिस अमीबा को सबसे छोटी इकाई मानते हैं अथवा उसके अन्दर विद्यमान गुणसूत्र, जीन्स, D.N.A. आदि को सूक्ष्मतम पदार्थ मानते हैं, वे नहीं जानते कि जहाँ उनका जीव विज्ञान समाप्त हो जाता है, वहाँ भौतिक विज्ञान प्रारम्भ होता है और जहाँ वर्तमान भौतिक विज्ञान समाप्त हो जाता है, वहाँ वैदिक भौतिक विज्ञान प्रारम्भ होता है और जहाँ वैदिक भौतिक विज्ञान की सीमा समाप्त हो जाती है, वहाँ वैदिक आध्यात्मिक विज्ञान प्रारम्भ होता है। आज विडम्बना यह है कि वैदिक भौतिक विज्ञान एवं वैदिक आध्यात्मिक विज्ञान की नितान्त उपेक्षा करके वा उसका उपहास वा विरोध करके भौतिक विज्ञान एवं जीव विज्ञान आदि की समस्याओं का हल खोजने का प्रयास किया जा रहा है। यह भी एक दुःखद सत्य है कि संसार को वैदिक भौतिक विज्ञान से अवगत कराने वाले भी कहाँ हैं? इस कारण वर्तमान विज्ञान अनेक समस्याओं से ग्रस्त है तथा एक समस्या का समाधान करने का प्रयास करता है, तो अनेक नई समस्याओं को उत्पन्न भी कर लेता है। एक टैक्नोलॉजी का आविष्कार करता है, तो नाना दुष्प्रभावों को भी उत्पन्न कर लेता है, दवाओं के विकास के साथ रोगों का भी निरन्तर विकास हो रहा है, सुख—साधनों के विकास के साथ—2 अपराधों एवं पर्यावरण प्रदूषण को भी समृद्ध करता जा रहा है। इन सब समस्याओं का मूल कारण है, वर्तमान विज्ञान का अपूर्ण ज्ञान, जिसका कारण वैदिक ज्ञान की उपेक्षा ही है। अस्तु।

हम चर्चा कर रहे थे कि सृष्टि का प्रत्येक कथित मूलकण व फोटोन सूक्ष्म वैदिक रश्मियों के अति बुद्धिमत्तापूर्ण संयोग से बने हैं। वे रश्मियां मनस्तत्व एवं मनस्तत्व, काल व प्रकृति के संयोग से उत्पन्न होता है। सबके पीछे सर्वनियन्त्रक, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ चेतन सत्ता ईश्वर की प्रेरणा है। सृष्टि के सर्वाधिक सूक्ष्म तत्व प्रकृति से लेकर वर्तमान मूलकणों तक की विकास यात्रा बड़ी लम्बी व व्यवस्थित वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसका वर्तमान भौतिक वैज्ञानिकों को विशेष भान नहीं है। मूलकणों एवं फोटोन की उत्पत्ति से लेकर तारे, ग्रह व उपग्रहों तक के निर्माण तक की विकास यात्रा की चर्चा यहाँ करना उचित नहीं। वैसे वर्तमान Cosmology, Particle Physics, Astrophysics, Quantum

आर्य वीर दल राजस्थान के युवा चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण शिविर

उदयपुर संभागीय शिविर

मई माह 2018

सम्पर्क : जीवनलाल जिला संचालक —9460080886

एम.पी. सिंह (संभाग संचालक) मों 7014133853

अजमेर संभागीय शिविर

आर्य वीर शिविर 23—30 मई 2018

आर्य वीरांगना शिविर 5—12 जून 2018, ऋषि उद्यान,

अजमेर सम्पर्क सूत्रः विश्वास पारीक मो. 9460016590

सुशील शर्मा मो. 7665447674

भरतपुर संभागीय शिविर

गंगापुर सिटी 14—20 मई 2018

सम्पर्क सूत्रः नरेन्द्र आर्य (जिला संचालक)

मों 9414986451

अभिषेक (नगर संचालक) मों 9309258185, 7014517154

जयपुर संभागीय शिविर

जयपुर संभागीय शिविर मई माह

स्थान — आर्य समाज निंदड़

सम्पर्क दीपक शास्त्री (जिला संचालक)

मो. 9462965528

जोधपुर संभागीय शिविर

जोधपुर संभागीय शिविर मई माह,

स्थान —महर्षि दयानन्द स्मृति भवन

सम्पर्कः सेवा राम आर्य मों 8946981888

कोटा संभागीय शिविर

कोटा संभागीय शिविर मई माह

सम्पर्कः रमेश गोस्वामी

(जिला संचालक कोटा) 9461182706

बीकानेर संभागीय शिविर

बीकानेर संभागीय शिविर मई माह, स्थान —श्री डूंगरगढ़

सम्पर्क श्री सुभाष शास्त्री (संभाग संचालक) मों 9414416410   श्री अमित आर्य (जिला संचालक) मों 9929946469

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता — 14/11।।

सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

आर्य समाज लाडनू नागौर एक दृष्टि

आर्य समाज लाडनू (जिला नागौर) में आर्य समाज का भवन लाडनूं में मुख्य स्थान राहूगेट के पास स्थित है। यह स्थल पुराने बस स्टैंड के सामने ही स्थित है। हर साल गणगौर , जलझूलनी एकादशी का रैवाडियों का मेला , मोहर्रम पर ताजियों का मेला आदि का आयोजन में इस स्थान की भूमिका व महत्व बढ जाता है। इस आर्य समाज की स्थापना के सम्बंध में सर्व श्री सिरहमल माथुर , सोहनरलाल बैद , हरिश्चन्द्र आर्य , मोतीलाल आर्य , ठा. चिमनसिंह जोधा आसोटा , नानकराम आर्य दुजार , हुकमारा भाटी मगलपुरा आदि महानुभाव आर्य– विचारों के धनी थे और इनके मन – मस्तिष्क में यह विचार आया कि यदि लाडनूं शहर में आर्य समाज का अपना भपन निर्मित हो जावे तो इस समूचे क्षेत्र के लिये यह अति उत्तम होगा । इनकी इस इच्छा के अनूरुप इनके द्वारा प्रयत्न शुरु किये गये और अपना तन , मन व धन प्रदान करें इन्होंने इसे मूर्तरुप देने के लिये उसका कार्यभार तत्कालीन आर्य समाज प्रधान हरिश्चन्द्र आर्य एवं मंत्री मोतीलाल आर्य को सौंपा गया और इसके लिये जमीन की व्यवस्था की गई । इस समय सुजानगढ , मंडावा, लाडनूं क्षेत्रो से चन्दा इकट्ठा किया गया । औक्र विक्रमी सम्वत् 1987 चैत्र सुदी प्रथमा को आर्य समाज का शिलान्यास किया गया । सम्वत् 1997 मे दक्षिण में हैदराबाद में निमाज के खिलाफ सत्याग्रह छिड़ा , जिसमें प्रतिनिधि सभा अजमेर की अपील पर लाडनूं आर्य समाज का एक जत्था हैदराबाद भिजवाया गया था । उस समय सभी प्रांतों से आर्य समाजों द्वारा सत्याग्रहियों के जत्थे हैदराबाद भेजे गये थे । हैदराबाद सत्याग्रह में जेल जाने वालों में लाडनूं से गये सत्याग्रही हुकमाराम भाटी मंगलपुरा , गणेश सिंह आर्य (पाट्टीदार) खानपुर , चौधरी डालुसिंह आर्य , चौधरी रुपाराम आर्य , चौधरी उमाराम आर्य व चौधरी प्रभुराम आर्य आदि छह सत्याग्रही शामिल थे । इन सबके हैदराबाद आंदोलन से विजयी होकर लाडनूं वापस लौटने पर आर्य समाज ने एक बड़े उत्सव के रुप में उनका भावभनास्वागत किया तथा पूरे शहर मे प्रभातफेरी निकाल कर लोगों को संदेश दिया । अपनी स्थापना एवं उसके बाद के वर्षो म लाडनूं का आर्य समाज विभिन्न आंदांलनकारी एवं समाज परिवर्तन के कार्यो में अपनी महती भूमिका निभाता रहा । सामाजिक सुधारों और स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका आर्य समाज लाडनूं की रही । लाडनूं मे स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी आर्य नेताओं का जमघट लगा रहता था ये क्रांतिकारी आर्य समाज के पिछले दरवाजे से आते थे और समाज भवन में उनका विचार – विमर्श होता था यहां स्व. हरिश्चन्द्र आर्य के घर पर जगजीवन राम चौधरी , क्रांतिकारी भजनोपदेशक मोहर सिंह व रामसहाय , चौधरी कुम्भाराम सिंह आर्य आदि आते थे तथा राजशाही के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करते थे । मोहर सिंह के भजनों के कार्यक्रमों मेंरात के एक बजे तक भी जनता चिपकी रहती थी । वे अपने भजन , चुटकलों , कहानियों आदि के माध्यम से लोगों को तल्लीन रखा करते थे और उनमें जागृति का बीजारोपण किया करते थे । सामंतशाही के अत्याचारों ने हरिश्चन्द्र आर्य के परिवार को बहुत क्षति पंहुचाई , जो वे आज तक भुगत रहे हैं

उस समय सामाजिक सुधारों में शद्धिकरण कार्यक्रम के तहत ओसवाल, ब्राह्मण , सुनार,दर्जी, ईसई व मुस्लिमों का शुद्धिकरण किया गया था विविध वर्गों के बीच अन्तर्जातीय विवाहों को सम्पन्न करवाया गया । मृतक भोज , बालविवाह , विधवाओं के पुनर्विवाह करवाये गये । आर्य समाज द्वारा स्त्री जाति पर बड़े अत्याचार होते थे , उनका विरोध और लड़कियों को पढने के लिये प्रोत्साहन किया जाता था । पौराणिक बंधुओं ने इससे चिढ का स्व. हरिश्चन्द्र आर्य के परिवार को सैनी जाति से बहिष्कृत कर दिया था

उस समय भी आर्य समाज को हड़पने के लिए अनेक असामाजिक तत्वों ने कई तरह के हथकंडे अपनाये जाते रहे , लेकिन व उनमें सफल नहीं हो पाये , क्योकि तत्कालीन आर्यसभासद व पदाधिकारी सिरहमल माथुर, मोतीलाल आर्य , हरिश्चन्द्र आर्य , हुलाशचन्द आर्य , गणपत राय आर्य , गणपत राम बागड़ा कसूम्बी आदि ने समाज को असामाजिक तत्वों के हाथों में जाने से रोका और इसका पूर्ण संरक्षण किया । आर्य समाज इन लोगों को सदैव याद रखेगा ।

वर्तमान में भी आर्य समाज लाडनूं को ऐसे ही असामाजिक तत्वों से मुक्त करवाया गया है, जिसके लिए मैंने पहल की , जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर के मंत्री डा. सुधीर कुमार शर्मा , जिला प्रधान डा. टीकाराम चौधरी , मंत्री श्री जगजीत सिंह आर्य , व मंत्री यशमुनि वानप्रस्थी का यह आर्य समाज आभारी रहेगा । आर्य समाज के स्थानीय सभासदों प्रधान ओमप्रकाश बागड़ा , उपप्रधान डा. टीकाराम चौधरी मंत्री श्री जगजीत सिंह आर्य , कोषाध्यक्ष श्री सतीशचंन्द गुप्ता , उपमंत्री श्री वेदप्रकाश आर्य , कानून मंत्री श्री जगदीश यायावर , आर्यवीर दल प्रभारी डा. उमेश आर्य तथा डा. राजेन्द्र सिंह आर्य श्रीमती रामेश्वरी देवी आर्या , धर्मेन्द्र सिंह , स्वामी ओमदास , श्रीमती शांतिदेवी ,श्री राजेन्द्र आर्य मंगलपुरा , श्री अंकुश आर्य ,

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री सुरेश सोनी , श्री भगचंन्द बालदीप , श्री लक्ष्मीनारायण मंगलपुरा आदि के सहयोग से आर्य समाज आगे बढ रहा है और बढता रहेगा । वर्तमान में आर्य समाज भवन में उपर की मंजिल मे पंजाब नेशनल बैंक की स्थानीय शाखा स्थित है। उस उपरी मंजिल को तैयार करवाने में जिन दानदाताओं ने अपना सहयोग निःस्वार्थ भाव से प्रदान किया , उन सबका आर्य समाज हार्दिक आभार प्रकट करता है।

रामचंन्द्र सिंह आर्य
पुत्र – स्वर्गीय हरिश्चंद्र आर्य
संरक्षक – आर्य समाज लाडनू

परमात्मा व मूर्तियों का स्वरूप

जिन कल्पित चित्रों , मूर्तियों को हृदयांगम कर हमनें ईश्वर मान लिया है, उनके बनाने वाले चित्राकारों, मूर्तिकारों को हम कभी भी याद, स्मरण नहीं करते । उन कलाकारों को हमें कभी तो धन्यवाद व पुरस्कार करना चाहिये, पर हम तो उनके कभी याद ही नहीं करते हैं।

हम मूर्तियों को ईश्वर के मूल्य या उनका प्रतीक मान कर पूजा अर्चना, आराधना आदि करते हैं। यह कितना उचित है, जबकि हम सब अच्छी तरह जानते, समझते हैं कि ये मूर्तियां जड. है, फिर भी सच्चाई को स्वीकार नहीं कर, स्वयं सच्चाई से दूर अज्ञानता व अंधविश्वास में डूंबे जा रहे हैं। आखिर क्यों ? सम्भवतः इसकी बुनियाद में हमारी पुरानी पारम्परिक रीति रिवाजों में हमारा बधें रहना है। हमें उन रिवाजों को तोड़ने में डर लगता है। यदि हम जड़ मूर्तियों को भगवान् मान कर इनमें आस्था, श्रद्धा नहीं रखेंगें और पूजा पाठ निर्धारित पारम्परिक रीति से नहीं करेंगे तो हमारे साथ कोई अनहोनी घटना होने अथवा न होने का काल्पनिक डर हमारे मन में सदैव बना रहता है। इस मानसिकता ,डर से हमको उबरना ही होगा ।

हम सब अच्छी तरह से जानते , समझते हैं और मानते भी है कि हम सभी को उस परमशक्तिमान ने बनाया है, सम्पूर्ण सृष्टि की रचना उसी ने की है, इसके उपरान्त भी हम उस परमशक्तिमान ईश्वर की मूर्ति बनाकर मंदिरों में उसकी प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। हम शान्ति व अन्तर्मुखी होकर स्वयं से कभी एक प्रश्न पूछें कि क्या हम उस सृष्टि के रचियता परमपिता की मूर्ति बनाकर उसमें उसकी प्राण प्रतिष्ठा करने में सक्षम हैं , जो हम सबके जीवन का आधार है उसके जीवन की आधरशिला रखने की शक्ति क्या हम रखते हैं ? क्या कोई पुत्र अपने पिता को कभी जन्म दे सकता है ? कभी नहीं, तो परमपिता की प्राण प्रतिष्ठा हम कैसे कर सकते हैं? कभी नहीं कर सकते, असम्भव है। परन्तु हम कर रहे है और अंधकार, अंधविश्वास व झूंठे दिखावे में स्वयं के साथ समाज को भी धकेल रहे है। हम जानते, अंधविश्वास व झूंठे दिखावे में स्वयं के साथ समाज को भी चकेल रहे हैं। हम जानते, समझते, अनजान व मूर्ख बन रहे हैं । आखिर क्यों ?

हमकों तो इसकी खबर तक नहीं है कि हम धर्म के नाम पर कितना अधर्म और पाप करते जा रहे हैं। अधर्मी, बलात्कारी, पाखण्डी, धूर्त, निकृष्ट, भांग, गांजा, आदि का नशा करने वाले पण्डे पुजारियों साधुओं को इस प्रकार के अनैतिक कृत्य व अत्याचार करने में सहयोग कर रहे है। हम उनके जाल में फँस अपने धन को बर्बाद व लुटा रहे हैं और उनकी पूजा भी करते हैं। हमने हमारे आराध्य मर्यादा पूरूषोत्तम श्रीराम की मर्यादा, इनके आचरण उनकी रीति , नितियों को कभी आने नही दिया । उनके जैसा भाई प्रेम , साहस , त्याग को जीवन में कभी आने नहीं दिया । हमनें योगेश्वर श्री कृष्ण के गीता के ज्ञान को कभी समझा नहीं । हम मात्र रास लीला और राधा के प्रेम प्रसंग तक ही सीमित रह गये । उनकी योग क्रियाओं , निर्भयता , प्रत्येक परिरिस्थति में स्वयं को श्रेष्ठ (आर्य पुरुष) बनाये रखने की कला अपने कर्म को सदैव प्रधानता के पद पर रखना, हमने कभी सीखा नहीं । हमनें अपने पर विश्वास न कर उचित ज्योतिष, भाग्यफल , जादू , टोना , टोटका आदि पर विश्वास किया । हम इस प्रकार वास्तविकता , सच्चाई से दूर रहे और वर्षो से दुख व कष्टो को भोग रहे हैं।

हमने असहाय , गरीब व अनाथों की कभी सुध नही ली । नारियों (अपनी पत्नियो ,बहनों , पुत्रियों) को सदैव कम महत्त्व दिया है। (नारी तो नरक का द्वार है) इस कहावत का अधिकतर उचित मानते है। हम सोचे कि क्या यह सब समाज के हित के लिये सही है। हमको सच्चा व सही मार्ग अपनाना ही होगा जो केवल और केवल मात्र वेद मार्ग ही है।

हमने अपने आपको कर्मशील बनाकर पुरुषार्थी होकर उससे होने वाले फल वेदों के सच्चे ज्ञान को समझ कर आत्मसात करके अपने जीवन में उतारना होगा । अपने आपको व अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिये वेदों की ओर लौटना ही होगा । इसके लिये महर्षि दयानन्द के प्रकाश स्तम्भ ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को समझना उनकी विचारधारा को अपनाना ही पड़ेगा । उस महान सर्वश्रेष्ठ, सर्वान्तरयामी , सर्वशक्तिमान , अमर , निराकार , परमात्मा, चित्रकार , सृष्टि निर्माता के दिगदर्शन करने के लिये मन की आंखों को अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान को जाग्रत करना होगा । इसी माध्यम से उस परमशक्तिशाली रचनाकार ,

- **जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता; ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। – एकादश समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश**

चित्रकार को हम समझ व दृष्टिगोचर कर सकते हैं। जीवन में शान्ति व सुख प्राप्त करने का मात्र यही एक मार्ग है और मार्ग तो भटकाने व भ्रमित करने वाले ही सिद्ध होंगे।

ओम प्रकाश गुप्ता
बी – 136 , महेश नगर , जयपुर
मो. न. 9829205559

वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर

आयोजक आर्य वीर दल राजस्थान

स्थान –

आर्ष महाविद्यालय आबु पर्वत सिरोही

दिनांक –

29 मई से 1 जून 2018

45 कुल शिवारार्थी अधिकतम भाग ले सकेंगे।

पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा।

युवा अथवा स्वयं को युवा समझने वाले अधिक उम्र के आर्य जन भाग ले सकेगे।

सम्पर्क देवेन्द्र शास्त्री कार्यकारी संचालक आर्य वीर दल राजस्थान मों 9352547258, 9785462640
गगेन्द्र आर्य स्नातक गुरूकुल आबु पर्वत 74250 70732

आवश्यकता

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत (सम्बद्ध महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरयाणा) में संस्कृत – साहित्य, हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित आदि विषयों के अध्यापन हेतु अध्यापकों की आवश्यकता है। कृपया सेवानिवृत अध्यापक महानुभाव ही सम्पर्क करें । आवास, भोजन, गोदुग्ध की निःशुल्क व्यवस्था के साथ–साथ समुचित मानदेय भी दिया जाएगा । इच्छुक महानुभाव गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव पर दिनांक 26–27–28 मई को पधारे । सम्पर्क सूत्र :–

8764218881,9414589510,8005940943

श्रद्धांजलि

वैदिक धर्म के प्रहरी दैनिक अग्निहोत्री आर्य समाज एवं आर्ष गुरूकुल शिक्षा पद्धति के प्रेमी श्रीमान् जयसिंह जी गहलोत का दुःखद देहावसान हो जाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य वीर दल राजस्थान के सभी सदस्यों को बहुत दुःख हुआ सभी सदस्य उनकी आत्मा की चिर शांति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है और इस दुःख की घडी में परिवार जन को यह दुःख सहने की शाक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते है ।

ओम् शान्ति शान्ति शान्ति

- **परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।**

– सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वाज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है ।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है।

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार ।

अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित कर पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1. आर्ष गुरुकुल आबू पर्वत देलवाड़ा सिरोही का 28 वाँ भव्य त्रि दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 26–27–28 मई 2018 को बडे धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है।
   सम्पर्कः आचार्य ओम प्रकाश आर्य मों 9414589510
   रजनीकान्त आर्य मों 9461046483
2. इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली 25–26–27–28 अक्तूबर, 2018

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषकः-
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक **A/c No.:18830100010430** तिलक नगर, जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।